कक्षा : छठी– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) असंज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का कितने कोटाकोटि सागरोपम का उत्कृष्ट बंध करते हैं-
(क) 50 (ख) 100
(ग) 1000 (घ) 70 (ग)

(ii) आयुष्य बन्ध करने में कितना काल लगता है-
(क) 1 मुहूर्त (ख) अन्तर्मुहूर्त
(ग) 1/3 मुहूर्त (घ) 6 मास (ख)

(iii) सात कर्मो का 100 कोटाकोटि सागरोपम का स्थिति का बन्ध होने पर अबाधा काल होगा-
(क) 10000 वर्ष (ख) 1000 वर्ष
(ग) 100 वर्ष (घ) 10 वर्ष (क)

(iv) कर्म प्रकृतियों के अबाधाकाल का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-
(क) भगवती सूत्र (ख) उत्तराध्ययन सूत्र
(ग) पन्नवणा सूत्र (घ) नन्दी सूत्र (ग)

(v) भवनपति देवी में कितने योग मिलते हैं-
(क) 13 (ख) 15
(ग) 3 (घ) 11 (घ)

(vi) थलचर पुरुष में कितने गुणस्थान हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 6 (ग)

(vii) आठवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह है-
(क) 22.5 अहोरात्रि (ख) 80 अहोरात्रि
(ग) 100 अहोरात्रि (घ) 45 अहोरात्रि (ग)

(viii) सिद्ध भगवान का उत्कृष्ट विरह है-
(क) 6 माह (ख)9 माह
(ग) 3 माह (घ) 12 माह (क)

(ix) 5 महाव्रत का जघन्य विरह कितने वर्ष का है-
(क) 84,000 वर्ष (ख) 63,000 वर्ष
(ग) 72,000 वर्ष (घ) 2,52,000 वर्ष (ख)

(x) पन्द्रहवीं भाव दिशा है-
(क) कर्मभूमि (ख) अकर्मभूमि
(ग)अन्तरद्वीप (घ) सम्मूर्च्छिम मनुष्य (ग)

(xi) नवमें देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान के देवता किस दिशा में थोड़े हैं-
(क) उत्तर (ख) पूर्व
(ग) दक्षिण (घ) सभी में समान है (घ)

(xii) संज्वलन लोभ का संज्ञी पंचेन्द्रिय के लिए उत्कृष्ट अबाधाकाल कितना है-
(क) 2000 वर्ष (ख) 1000 वर्ष
(ग) 4000 वर्ष (घ) 3000 वर्ष (ग)

(xiii) यशःकीर्ति और उच्च गोत्र ये प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य कितनी स्थिति की बान्धता हैं-
(क) 2 मुहुर्त्त (ख) 4 मुहुर्त्त
(ग) 6 मुहुर्त्त (घ) 8 मुहुर्त्त (घ)

(xiv) समुच्चय जीव स्त्रीवेद की प्रकृति का उत्कृष्ट बन्ध कितनी स्थिति का करता है-
(क) 10 कोटाकोटि सागरोपम (ख) 15 कोटाकोटि सागरोपम
(ग) 20 कोटाकोटि सागरोपम (घ) 30 कोटाकोटि सागरोपम (ख)

(xv) किस जीव के 66 सागरोपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट बन्ध सम्यक्त्व मोहनीय प्रकृति का होता है-
(क) संज्ञी पंचेन्द्रिय (ख) असंज्ञी पंचेन्द्रिय
(ग) त्रीन्द्रिय जीव (घ) चतुरिन्द्रिय (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) ईर्यापथिक सातावेदनीय की स्थिति दो समय की है। (हाँ)

(ii) मिथ्यात्व मोहनीय का उदय पाँचवें गुणस्थान तक बताया है। (नहीं)

(iii) आहारक चतुष्क का बंध एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीव नहीं करते। (हाँ)

(iv) असंज्ञी पंचेन्द्रिय देवगति, देवानुपूर्वी इन दो प्रकृतियों को उत्कृष्ट 18 कोटाकोटि सागरोपम की बाँधता है। (नहीं)

(v) संज्ञी पंचेन्द्रिय तीन विकलेन्द्रिय और सूक्ष्मत्रिक इन छहों प्रकृतियों का उत्कृष्ट बंध 18 कोटाकोटि सागरोपम का करता है। (हाँ)

(vi) 98 बोल की अल्पबहुत्व का वर्णन प्रज्ञापना सूत्र के 13वें पद में हैं। (नहीं)

(vii) सम्मूर्च्छिम मनुष्य में 3 योग पाये जाते हैं। (हाँ)

(viii) चौरेन्द्रिय के अपर्याप्त में 4 लेश्याएँ पाई जाती हैं। (नहीं)

(ix) पाँचवीं नरक के नेरइये में 4 गुणस्थान पाये जाते हैं। (हाँ)

(x) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्त जीव मरकर वाणव्यन्तर देवों में उत्पन्न हो सकते हैं। (हाँ)

(xi) चारों गतियों का उत्कृष्ट विरह 8 मुहूर्त बतलाया गया है। (नहीं)

(xii) तमा नीची दिशा है। (हाँ)

(xiii) शिल्प स्थावर का वर्ण हरा है। (नहीं)

(xiv) आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति की टीका में बेइन्द्रिय के 80 भव बताये गये हैं। (हाँ)

(xv) पृथ्वीकाय का संस्थान मसूर की दाल के समान होता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	चारित्र मोहनीय प्रकृतियाँ	(क) 1 कोटाकोटि सागरोपम	25
(ii)	अशुभ वर्ण	(ख) 13	20 कोटाकोटि सागरोपम
(iii)	संज्ञी पंचेन्द्रिय	(ग) 1	2000 वर्ष
(iv)	100 वर्ष	(घ) 48 वर्ष	1 कोटाकोटि सागरोपम
(v)	महादण्डक	(च) 2000 वर्ष	98 बोल
(vi)	जलचर पुरुष में योग	(छ) 6	13
(vii)	सूर्य ग्रहण	(ज) 25	48 वर्ष
(viii)	छठे देवलोक में लेश्या	(झ) 20 कोटाकोटि सागरोपम	1
(ix)	पाच अनुत्तर विमान में उपयोग	(य) 4	6
(x)	निगोद में जीव के भेद	(र) 98 बोल	4

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मेरे तीन पुंज होने पर ही मिश्र मोहनीय और समकित मोहनीय की सत्ता प्राप्त होती है। मिथ्यात्व मोहनीय

(ii) मैं ऐसा जीव हूँ जो नपुंसकवेद का उत्कृष्ट स्थिति बंध 25 सागर का 2/7 भाग करता हूँ। द्वीन्द्रिय/बेइन्द्रिय

(iii) मैं आयु कर्म की एक ऐसी प्रकृति हूँ, जिसका उत्कृष्ट स्थिति बन्ध संक्लेश परिणामों में होता है। नरकायु

(iv) मैं ऐसा कर्म हूँ, जिसकी 93 प्रकृतियाँ हैं। नाम कर्म

(v) मैं ऐसा संयत हूँ, जिसमें तीन लेश्या पाई जाती है। अप्रमत्त संयत/सातवाँ गुणस्थानवर्ती साधु

(vi) मुझमें एक से दस तक गुणस्थान पाये जाते हैं। सकषायी जीव

(vii) मुझमें पाँच योग पाये जाते हैं। एकेन्द्रिय जीव

(viii) मैं ऐसा ज्ञानी हूँ, जिसमें 14 योग पाये जाते हैं। मनःपर्यायज्ञानी

(ix) मेरा उत्कृष्ट विरह 15 अहोरात्रि है। तीसरी नरक
(x) मेरा कभी भी विरह नहीं होता है। पाँच स्थावर
(xi) मेरा कभी उद्वर्तन नहीं होता है। सिद्ध
(xii) मेरा उत्कृष्ट विरह देशोन 18 कोड़ाकोडी सागरोपम है। तीर्थंकर, तीन चारित्र
(xiii) मेरी 28 लाख कुल कोड़ी है। वनस्पतिकाय
(xiv) मैं शुभ आयु हूँ, मेरी उत्कृष्ट स्थिति 33 सागरोपम है। देवायु
(xv) मैं एक ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें अनाकार उपयोग नहीं मिलता। सूक्ष्म सम्पराय

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) संज्ञी पंचेन्द्रिय देवायु की कितनी उत्कृष्ट स्थिति बांधता है ?
उ. 33 सागरोपम और करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक।
(ii) चतुरिन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय की कितनी जघन्य स्थिति बांधता है ?
उ. 100 सागरोपम में पल्योपम के असंख्यात भाग कम।
(iii) मनुष्यायु तथा तिर्यंचायु का उत्कृष्ट अबाधाकाल कितना है ?
उ. करोड़ पूर्व का तीसरा भाग।
(iv) निगोद के चारों बोलों के क्रमांक लिखिए।
उ. 54,60,72 और 73
(v) 98 बोलों में से 24 वाँ बोल कब नहीं मिलता है ?
उ. जब सम्मूर्च्छिम मनुष्य का 24 मुहूर्त का उत्कृष्ट विरह पड़ता है।
(vi) 7वीं एवं 8 वीं द्रव्य एवं भाव दिशा लिखिए।
उ. द्रव्य दिशा- 7वीं-आग्नेय कोण- 8वीं-वायव्य कोण।
भाव दिशा- 7वीं पर्व बीज, 8वीं-स्कन्ध बीज।
(vii) सभी कच्चे पानी में हरी-वनस्पति की नियमा क्यों नहीं हो सकती?
उ. हरी का त्याग करने वाला भी कच्चे पानी का त्यागी हो, यह अनिवार्य नहीं। यदि प्रत्येक कच्चे पानी में वनस्पति मानी जाय तब तो कच्चे पानी के सेवन करने वाले को हरी का त्याग हो ही नहीं पायेगा।
(viii) नवीन साधु का विरह किस अपेक्षा से समझना चाहिए?
उ. नवीन साधु का विरह- 1,3,4,5 गुणस्थान से 7वें गुणस्थान में आने की अपेक्षा समझना चाहिए।
(ix) विरह किसे कहते हैं ?
उ. जितने समय तक उस-उस गति-जाति आदि में एक भी जीव उत्पन्न नहीं हो, उस काल को 'विरह' कहते हैं। अथवा जितने समय तक अभाव रूप अवस्था होती है, उसे विरह कहते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) समुच्चय जीव के मनुष्य गति एवं मनुष्यानुपूर्वी दो प्रकृतियों का जघन्य, उत्कृष्ट स्थिति बंध तथा अबाधा काल लिखिए।
उ. समुच्चय जीव मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी ये दो प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल पन्द्रह सौ वर्षों का है।
(ii) असंज्ञी पंचेन्द्रिय जिन प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध 1000 सागर का 2/7 भाग करता है, ऐसी नाम कर्म की 12 प्रकृतियों के नाम लिखिए।
उ. नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क।
तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियाँ, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति।

नोटः- इनमें से कोई बारह प्रकृतियाँ मान्य है।

(iii) आयुकर्म में अबाधाकाल होता है या नहीं ? संक्षेप में समझाइए।

उ. कोई जीव आगामी भव का आयु बन्ध करने के बाद जब तक मरण को प्राप्त नहीं होता, तब तक का काल अबाधाकाल माना जाता है। क्योंकि इस अवधि में आगामी भव की बँधी हुई आयु का न तो प्रदेशोदय होता है और न ही विपाकोदय होता है। आयुकर्म का अबाधाकाल नहीं मानने का कारण यह है कि सात कर्मों में जो अबाधाकाल का गणितीय नियम है, वह आयुकर्म में लागू नहीं होता है।

(iv) कौनसा जीव मिथ्यात्व मोहनीय कर्म की कितनी-कितनी उत्कृष्ट स्थिति बान्धता है?

उ. मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का एकेन्द्रिय 1 सागर का, बेइन्द्रिय 25 सागर का, तेइन्द्रिय 50 सागर का, चौरेन्द्रिय 100 सागर का, असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागर का तथा सन्नी पंचेन्द्रिय 70 कोटाकोटि सागरोपम का उत्कृष्ट बन्ध करते हैं।

(v) 98 बोलों में बोल क्रमांक 64 से 69 तक की परस्पर अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. 64. सूक्ष्म तेउकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा, 65. सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक, 66. सूक्ष्म अप्काय के अपर्याप्त विशेषाधिक, 67. सूक्ष्म वायुकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक, 68. सूक्ष्म तेउकाय के पर्याप्त संख्यात गुणा, 69. सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त विशेषाधिक।

(vi) 98 बोलों में बोल क्रमांक 40 एवं 15 में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग एवं लेश्या लिखिए।

उ.

	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
40. ज्योतिषी देव संख्यात गुणा-	2	4	11	9	1
15. सातवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा-	2	4	11	9	1

(vii) 9 ग्रैवेयक की दूसरी त्रिक एवं वासुदेव का जघन्य, उत्कृष्ट विरह लिखिए।

उ.

दूसरी त्रिक (4-6)	1 समय	संख्यात हजार वर्षों का
वासुदेव	2,52,000 वर्ष	देशोन 20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम।

(viii) विरह द्वार किस सूत्र के किस पद से लिया गया है ? जघन्य 6 माह और उत्कृष्ट देशोन 18- कोडाकोडी सागरोपम विरह किनका है ?

उ. पन्नवणा सूत्र के छठे पद से- जघन्य 6 माह विरह- चन्द्र ग्रहण, सूर्यग्रहण।
उत्कृष्ट- देशोन 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम विरह- चक्रवर्ती, तीर्थंकर, 3 चारित्र, परिहार विशुद्धि सूक्ष्म-सम्पराय, यथाख्यात, चार तीर्थ, 5 महाव्रत, 2 चारित्र (सामायिक छेदोपस्थापनीय)।

(ix) पाँचवें, छठे, सातवें एवं आठवें देवलोक के देवता किस दिशा में थोड़े है और किस दिशा में अधिक है ?

उ. सबसे थोड़े पूर्व, पश्चिम, उत्तर दिशा में हैं। इन दिशाओं में पुष्पावकीर्ण विमान कम हैं और कृष्णपाक्षिक जीव कम उत्पन्न होते हैं इसलिये थोड़े हैं। दक्षिण दिशा में इनकी अपेक्षा असंख्यात गुणा हैं। इस दिशा में पुष्पावकीर्ण विमान अधिक है और यहाँ कृष्णपक्षी तिर्यंच योनि के जीव बहुत उत्पन्न होते हैं। आवलिका प्रविष्ट विमान चारों दिशाओं में तुल्य हैं।